बातचीत

न. 08/2025 | भारतीय थलसेना का प्रकाशन | अगस्त 2025

शांति स्थापना में भारत
साहस और करुणा की विरासत

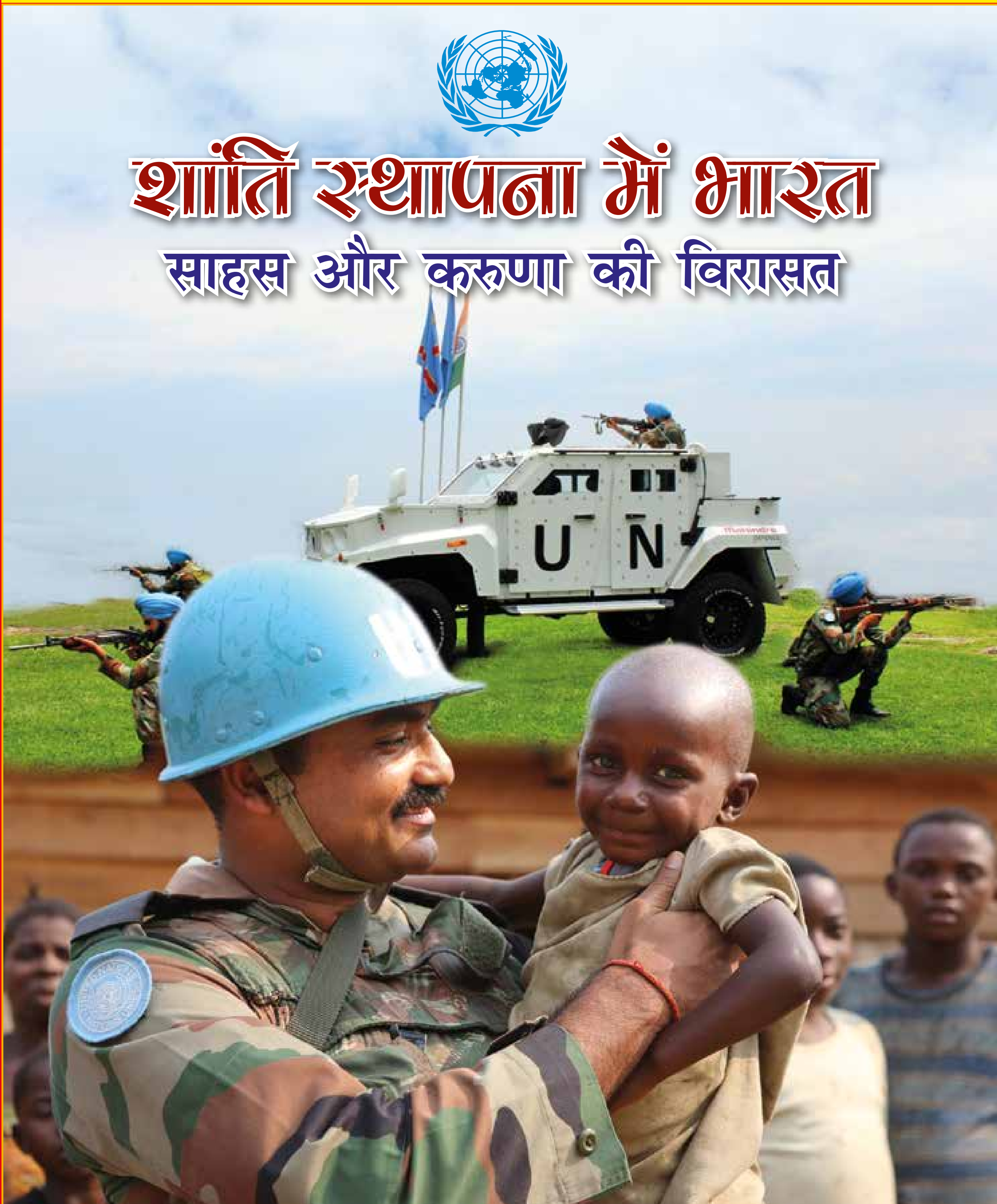

शांति के लिए भारत की वैश्विक यात्रा...

Korea
1950-54

Middle East
1956 - 67

UNEF 1956 - 67
UNOGIL 1958

Congo
1960- 63

UNSF 1962 - 63
UNYOM 1963

Angola
1976-2000

UNIIMOG 1988- 91
UNAVEM 1989- 99
UNTAG 1989- 91
ONUCA 1989- 92

Cambodia
1991-94

ONUSAL 1991- 95

Mozambique
1992-94

UNOMIL 1993- 97

Somalia
1993-95

Rwanda
1993-96

UNMIBH 1995- 2002

Sierra Leone
1998- 01

UNMIL 2003- 18

Ethiopia & Eritrea
2006- 08

Current Missions

मध्य पूर्व 1950 से
साइप्रस 1964 से
पश्चिमी सहारा 1997 से

लेबनान 1998 से
डीआर कांगो 1999 से
दक्षिण सूडान 2005 से

गोलान हाइट्स 2006 से
एबेई 2011 से
मध्य अफ्रीकी गणराज्य (सीएआर) 2008 से

वसुधैव कुटुम्बकम्

दक्षिण सूडान में नागरिकों की सुरक्षा (यूएन मिशन)

लेकिन इस प्रतिबद्धता के पीछे प्रेरणा क्या है?

इसका उत्तर हमारी सभ्यतागत मूल्यों में छिपा है......

"वसुधैव कुटुम्बकम्"

दुनिया एक परिवार है

अब तक भारत के 2,92,000 सैनिकों ने 53 मिशनों में सेवाएं प्रदान करने के साथ भारत संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में सबसे बड़े सैन्य योगदानकर्ता देशों में सबसे आगे है।

मोनुक

भारत ने संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में पहला योगदान 1950 में कोरियाई युद्ध के दौरान किया था। तब से, भारतीय सेना के सैनिकों ने अपने कार्यों से उदाहरण प्रस्तुत किया है। भारत बहुध्रुवीय विश्व में लेकिन एकजुट मानवता में आस्था रखता है। इसीलिए हम वैश्विक स्तर पर कार्य करते हैं, जबकि हमारी जड़ें प्राचीन सिद्धांतों में निहित हैं।

लेंस के माध्यम से अभियान

नागरिकों की सुरक्षा एवं संघर्ष विराम की निगरानी

इसमें सुरक्षित क्षेत्रों की स्थापना, सीमा रेखाओं की गश्त और नागरिकों के लिए खतरे की स्थिति में त्वरित हस्तक्षेप शामिल है जब नागरिक खतरे में हों – प्रायः संघर्ष की स्थिति में हस्तक्षेप करना।

यूएसआईएसएफए (अबेई)

एमओएनयूएससीओ (कांगो)

एमओएनयूएससीओ (कांगो)

लैंगिक समानता और बाल संरक्षण

महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा, लैंगिक हिंसा में कमी और कमजोर समुदायों में विश्वास स्थापित करना।

यूएनआईएसएफए (अबेई)

मानवीय सहायता

भारतीय शांति सैनिक आपदा राहत और घरों व सामुदायिक बुनियादी ढाँचे के पुनर्निर्माण में सहायता के माध्यम से महत्वपूर्ण मानवीय सहायता प्रदान करते हैं।

यूएन मिशन (दक्षिण सूडान)

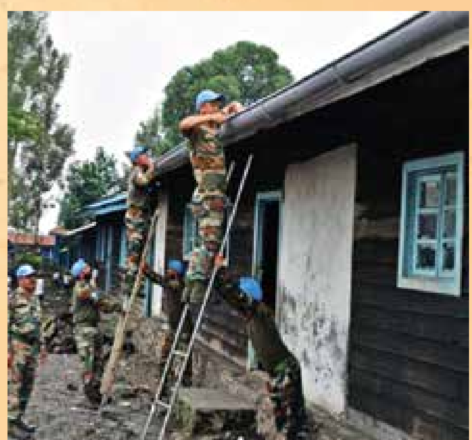

एमओएनयूएससीओ (कांगो)

यूएन मिशन (दक्षिणी सूडान)

यूएनआईएफआईएल (लेबनान)

चिकित्सा सहायता

भारतीय सैन्य टुकड़ियाँ संघर्ष प्रभावित नागरिकों और विस्थापित परिवारों के लिए चलते-फिरते अस्पताल स्थापित करती हैं और चिकित्सा शिविर चलाती हैं।

सामुदायिक जुड़ाव और पुनः एकीकरण

सामुदायिक संपर्क, व्यावसायिक प्रशिक्षण और साक्षरता कार्यक्रमों के माध्यम से संवाद और मेल-मिलाप को बढ़ावा देना – जिसका उद्देश्य समुदायों को स्वस्थ प्रदान करना है।

यूएनआईएसएफए (अबेई)

एमओएनयूएससीओ (कांगो)

यूएन मिशन (दक्षिण सूडान)

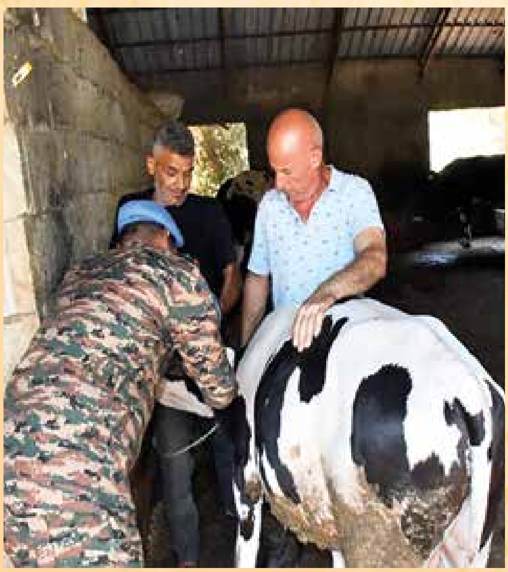

यूएनआईएफआईएल (लेबनान)

पशु चिकित्सा सहायता

भारतीय शांतिरक्षक नि:शुल्क पशु चिकित्सा सेवाएं, पशु रोगों का उपचार और स्थानीय किसानों को पशुपालन का प्रशिक्षण देते हैं, जिससे खाद्य सुरक्षा और आजीविका में सुधार होता है।

शांति स्थापना में महिलाएं एक उभरती हुई शक्ति

महिला शांतिरक्षकों की उपस्थिति

- संघर्ष और टकराव को कम करने में मदद करती हैं
- महिलाओं और बच्चों को अधिक सुरक्षा का अनुभव कराती हैं
- स्थानीय महिलाओं तक पहुँच और सहायता को बेहतर बनाती हैं
- हमारे शांतिरक्षक महिलाओं से संपर्क के लिए सुलभ होते हैं

सैन्य लैंगिक एडवोकेट अवार्ड

मेजर राधिका सेन

मेजर सुमन गवानी

संयुक्त राष्ट्र में हमारे गौरव

HE IS NEVER BORN NOR DOES HE EVER DIE OR HAVING ONCE COME INTO BEING WILL HE AGAIN CEASE TO BE HE IS UNBORN ETERNAL AND ANCIENT EVEN THOUGH THE BODY IS KILLED HE (THE SOUL) IS NOT SLAIN

कैप्टन गुरबचन सिंह सलारिया, परम वीर चक्र (मरणोपरांत)

5 दिसंबर 1961 को, कटांगा में एक संयुक्त राष्ट्र अभियान के दौरान, 3/1 गोरखा राइफल्स के कैप्टन गुरबचन सिंह सलारिया को एलिजाबेथविल एयरफील्ड पर एक सड़क अवरोध को हटाने के लिए एक छोटी टुकड़ी के साथ भेजा गया। लेकिन कैप्टन सलारिया और उनकी प्लाटून का सामना स्वचालित हथियारों और बख्तरबंद गाड़ियों से लैस बड़ी संख्या में विद्रोहियों से हुआ। उन्होंने बहादुरी से हमला किया और आमने-सामने के युद्ध में कई विद्रोहियों को मार गिराया। गोलीबारी के दौरान वे घायल हो गए और बाद में वीरगति को प्राप्त हुए। विद्रोही बल जल्द ही बिखर गया। कैप्टन गुरबचन सिंह सलारिया को उनकी अद्वितीय वीरता, नेतृत्व और सर्वोच्च बलिदान के लिए "परम वीर चक्र" से सम्मानित किया गया।

महावीर चक्र

लेफ्टिनेंट कर्नल ए.जी. रंगराज, एमवीसी

मेजर एन.बी. बनर्जी, एमवीसी

लेफ्टिनेंट वी.पी. त्रेहान, एमवीसी

एन.के. महावीर थापा, एमवीसी

एल.एन.के. आरबी गुरुंग, एमवीसी

PVC - 01 | MVC - 05 | KC - 02 | VrC- 21 | SC- 09 | SM - 37

न जायते म्रियते वा कदाचिन नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्य शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ।।

वैश्विक पद

161 कर्मियों ने सर्वोच्च बलिदान दिया

डैग हैमरस्कजॉल्ड पदक - 2025

डैग हैमरस्कजॉल्ड पदक उन संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिकों की याद दिलाता है जिन्होंने शांति बनाए रखने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

ब्रिगेडियर अमिताभ झा, एस.एम., वीएसएम

हवलदार संजय सिंह

चिह्न (कदम)

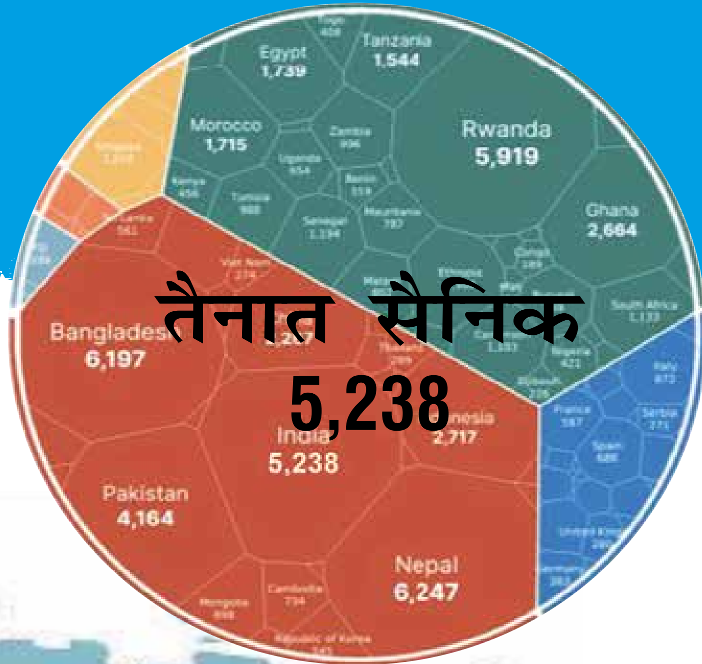

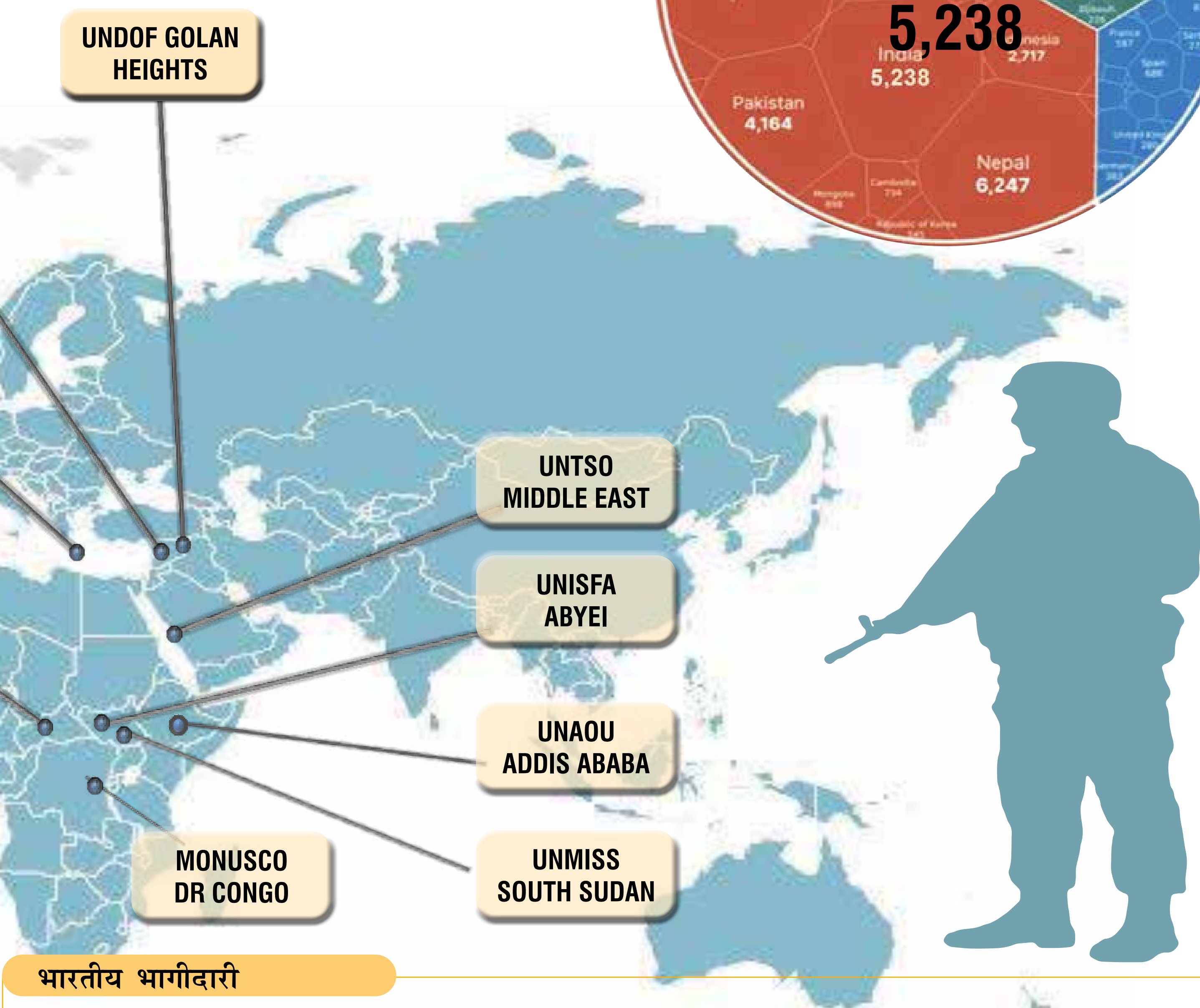

भारतीय भागीदारी

लगभग 2,92,000 सैनिकों ने योगदान दिया

30 बल कमांडर/वरिष्ठ अधिकारी

वर्तमान में 11 अभियानों में तैनात

72 अभियानों में से 53

थलसेनाध्यक्ष पृष्ठ

थलसेनाध्यक्ष ने भारत में अर्जेंटीना के राजदूत श्री मारियानो काउचीनो के साथ मिलकर इंडो-अर्जेंटीना सेना पर्वतारोहण अभियान का ध्वजारोहण समारोह आयोजित किया। यह अभियान लद्दाख के सुरु घाटी में स्थित माउंट कुन (7,077 मीटर) पर सम्पन्न हुआ।

थलसेनाध्यक्ष ने भटिंडा मिलिट्री स्टेशन का दौरा कर वर्तमान सुरक्षा स्थिति का जायजा लिया और चेतक कोर की ऑपरेशनल तैयारियों का मूल्यांकन किया।

थलसेनाध्यक्ष और श्री बी. वी. आर. सुब्रह्मण्यम, सीईओ, नीति आयोग ने सैन्य और नागरिक तकनीकी विशेषज्ञों की एक संयुक्त बैठक की अध्यक्षता की, जिसमें तकनीकी क्षेत्र में सहयोग और समन्वय की संभावनाओं पर विचार किया गया।

थलसेनाध्यक्ष ने आईआईटी मद्रास में 'अग्निशोध' भारतीय सेना अनुसंधान सैल (आईएआरसी) का उद्घाटन किया, जो रक्षा प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

25 अगस्त 2025 से 28 अगस्त 2025, अल्जीरिया की यात्रा के दौरान, थलसेनाध्यक्ष ने मुख्यालय थल सेना कमान, अल्जीयर्स में गार्ड ऑफ ऑनर की समीक्षा की।

थलसेनाध्यक्ष ने सैन्य इंजीनियरिंग सेवाओं (एमईएस) की कार्यक्षमता बढ़ाने हेतु दो वेब एप्लिकेशन आर्बिट्रेशन (एमआईएमएएमएसए) और इलेक्ट्रिक मेजरमेंट बुक (ई-बुक) लॉन्च किए।

पूर्व सैनिक कॉर्नर

लेफ्टिनेंट जनरल रणबीर छाबड़ा (सेवानिवृत्त) और हवलदार रजत (सेवानिवृत्त) ने पुणे के नायती में एक ईसीएचएस पॉलीक्लिनिक का उद्घाटन किया।

टाइगर डिवीजन ने लेफ्टिनेंट कर्नल शराक देव सिंह जम्वाल (सेवानिवृत्त) का 100वाँ जन्मदिन मनाया, जिन्होंने 1947-48 के भारत-पाक युद्ध में जोजिला दर्रे पर टैंक पहुँचाने में अग्रणी भूमिका निभाई थी।

श्योर स्विफ्ट स्ट्राइकर ब्रिगेड ने छत्रपति संभाजीनगर मिलिट्री स्टेशन में एक भव्य पूर्व सैनिक रैली का आयोजन किया, जिसमें 2500 से अधिक पूर्व सैनिक शामिल हुए। इनमें पूरे मराठवाड़ा से 78 वीर माताएं, वीर नारियां, वरिष्ठ पूर्व सैनिक और सम्मानित विभूतियाँ शामिल हुई थीं।

गढ़वाल राइफल्स के कैप्टन सी.एन. सिंह, एमवीसी की 60वीं बलिदान वर्षगांठ पर, उनके भाई श्री सुखदेव सिंह ने उनका ''महावीर चक्र'' लेफ्टिनेंट जनरल डी.एस. राणा, सीआईएनसीएएन और गढ़वाल राइफल्स व गढ़वाल स्काउट्स के कर्नल को धर्मशाला में सौंपा, जिसे रेजिमेंटल सेंटर में प्रदर्शित किया जाएगा।

थलसेनाध्यक्ष जनरल उपेन्द्र द्विवेदी ने 13 अगस्त 2025 को भटिंडा मिलिट्री स्टेशन में चार पूर्व सैनिकों को उनके असाधारण योगदान के लिए 'वेटरन अचीवर्स अवार्ड' से सम्मानित किया गया।

दक्षिण महाराष्ट्र एवं गोवा सब एरिया के जनरल ऑफिसर कमांडिंग ने कराड में पूर्व सैनिकों के लिए नई कैंटीन बिल्डिंग का उद्घाटन किया।

संक्षिप्त

भारतीय सेना और सिंगापुर सेना के बीच द्विपक्षीय अभ्यास "बोल्ड कुरुक्षेत्र" का 14वाँ संस्करण जोधपुर में सम्पन्न हुआ।

भारतीय सेना ने 05 अगस्त 2025 को दोपहर लगभग 1:45 बजे हर्षिल में आर्मी कैंप से लगभग 4 कि.मी. दूर धराली गांव के पास भूस्खलन की घटना के बाद राहत और बचाव अभियान शुरू किया।

सैदपुर ब्रिगेड के गोल्डन की वारियर्स ने जोलिंकांग, उत्तराखंड में 15,000 फीट की ऊँचाई पर दुर्लभ व कठोर परिस्थितियों में आक्रामक अभ्यासों को सफलतापूर्वक मान्य किया।

एक्सरसाइज सुरक्षा चक्र का आयोजन दिल्ली में किया गया, जिसका उद्देश्य सैन्य और नागरिक एजेंसियों के बीच अंतर-एजेंसी समन्वय और प्रतिक्रिया क्षमता का परीक्षण करना था। इस दौरान इमरजेंसी ऑपरेशन सेंटर्स (ईओसीज) को सक्रिय किया गया और मॉक ड्रिल्स की गई।

रैन संवाद 2025 - ''इम्पैक्ट ऑफ टेक्नोलॉजी ऑन वारफेयर'' विषय पर आधारित त्रि-सेवा संगोष्ठी का आयोजन मुख्यालय आर्मी ट्रेनिंग कमांड द्वारा मुख्यालय आईडीएस के तत्वावधान में आर्मी वॉर कॉलेज, मऊ (म.प्र.) में 26-27 अगस्त 2025 को किया गया। इसका उद्देश्य रणनीति, नवाचार और राष्ट्रीय सुरक्षा पर विचारों का समन्वय करना था।

उत्तरी कमान में पहली बार 26-27 अगस्त को रीजनल प्रधानमंत्री गति शक्ति एंड डिफेंस वर्क्स सेमीनार का आयोजन किया गया, जो एकीकृत आधारभूत ढांचे के विकास और रक्षा तैयारी को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

ऑस्ट्रेलियाई सेना प्रमुख, लेफ्टिनेंट जनरल साइमन स्टुअर्ट, 11 से 14 अगस्त 2025 तक भारत की आधिकारिक यात्रा पर थे और उन्होंने साउथ ब्लॉक में गार्ड ऑफ ऑनर की समीक्षा की।

भारतीय सेना ने जम्मू और पठानकोट में आई भीषण बाढ़ को देखते हुए मानवीय सहायता और आपदा राहत (एचएडीआर) अभियानों में 13 सैन्य टुकड़ियां तैनात की। अखनूर के निकट बल्ले दा बाग में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों से बच्चों सहित 24 नागरिकों को सुरक्षित निकाला गया।

पूर्वी कमान के तत्वावधान में ब्रह्मास्त्र कोर ने रांची मिलिट्री स्टेशन पर 'एक्स पूर्वी ड्रोन कौशल' का आयोजन किया, जिसमें स्वदेशी ड्रोन तकनीक को युद्ध अभियानों में शामिल करते हुए एक कृत्रिम युद्ध की स्थिति में 36 टीमों ने एक समन्वित अभियान का प्रदर्शन किया गया।

उप थलसेनाध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल पुष्पेंद्र सिंह ने 80वें शौर्य दिवस के अवसर पर 'इन्फेंट्री प्री एवरेस्ट मैसिफ पर्वतारोहण अभियान 2025' को नंदादेवी ईस्ट (7434 मीटर) के लिए झंडी दिखाकर रवाना किया। यह अभियान 'इन्फेंट्री एवरेस्ट मैसिफ मिशन 2026' की तैयारी के रूप में आयोजित किया गया है।

59वें आर्मी वूमेंस वेलफेयर एसोसिएशन (आवा) दिवस के अवसर पर विविध आयोजनों के साथ आवा सप्ताह मनाया गया। आर्मी वूमेन्स वेलफेयर एसोसिएशन की अध्यक्षा श्रीमती सुनीता द्विवेदी ने सभी वीर नारियों और वीरगति प्राप्त सैनिकों के परिजनों को स्नेहिल शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

इस माह का उपकरण

मैकेनिकल माइनफील्ड मार्किंग इक्विपमेंट एमके-II

एमएमएमई एमके-प्प एक स्वदेशी रूप से विकसित मैकेनिकल माइनफील्ड मार्किंग इक्विपमेंट (एमएमएमई) प्रणाली है, जिसे भारतीय सेना में शामिल किया गया है। इसका उद्देश्य माइनफील्ड्स को तेजी से चिन्हित करने और उनकी घेराबंदी करने की प्रक्रिया को न्यूनतम मानवीय हस्तक्षेप के साथ पूरा करना है। यह प्रणाली रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (इंजीनियर्स) और बीईएमएल लिमिटेड द्वारा संयुक्त रूप से विकसित की गई है। इसे रेगिस्तान, अर्ध-रेगिस्तान और समतल क्षेत्रों जैसे विविध भौगोलिक क्षेत्रों में प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए डिजाइन किया गया है। इस प्रणाली का सेना में समावेश रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और यह भारतीय सेना की संचालन क्षमताओं को सुदृढ़ करता है।

तकनीकी बढ़त

वाहन प्लेटफॉर्मः एक टॉट्रा 6X6 वाहन पर लगाया गया है।

अनुकूल (एडजस्टेबल) पिकेट स्पेसिंगः

- पिकेट्स को 10 से 35 मीटर की दूरी पर
- 5 मीटर के अंतराल पर
- 450 मिमी की गहराई तक लगाया जा सकता है।

निरंतर संचालनः एक बार में 500 पिकेट तक।

रस्सी क्षमताः 15 किलोमीटर (10 स्पूल ग 1.5 किमी प्रत्येक)।

संचालन तापमानः 0 से 45 डिग्री सेल्सियस।

चालक दल की आवश्यकताएँः एक चालक और चार परिचालक।

संचालन वातावरणः मैदानी, अर्ध-रेगिस्तानी और रेगिस्तानी।

आउटपुटः 15 मीटर पिकेट स्पेसिंग पर औसत गति कम से कम 1.2 किमी प्रति घंटा है।

मुख्य विशेषताएँ

- सैनिकों के जोखिम में कमी
- तेज गति और उच्च कार्यक्षमता
- अर्ध-स्वचालित संचालन
- एडजस्टेबल (अनुकूल) पिकेट दूरी
- उच्च चिन्हांकन गति
- भिन्न-भिन्न भू-भागों में संचालन की क्षमता

भारतीय सेना में महत्व

मैकेनिकल माइनफील्ड मार्किंग इक्विपमेंट एमके-II (एमएमएमई एमके-II) भारतीय सेना की युद्ध तत्परता और संचालन क्षमता को बढ़ाने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह एक स्वदेशी रूप से विकसित प्रणाली है, जो माइनफील्ड्स को तेजी और अर्ध-स्वचालित तरीके से चिन्हित करने में सक्षम बनाती है। इससे हाथ के (मैन्युअल) काम में कमी आती है और सैनिकों की सुरक्षा में वृद्धि होती है। यह प्रगति "आत्मनिर्भर भारत" पहल को भी सशक्त बनाती है, क्योंकि यह स्वदेशी रक्षा उत्पादन को प्रोत्साहित करती है।

परमवीर चक्र

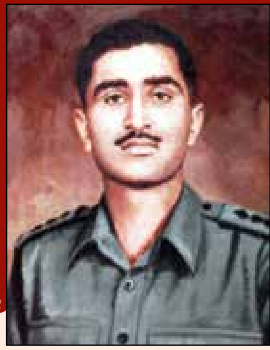

कैप्टन गुरबचन सिंह सलारिया गोरखा राइफल्स

उनोकाट की लड़ाइ

(05 दिसम्बर 1961)

5 दिसम्बर 1961 को लड़ी गई उनोकाट की लड़ाई भारत के सैन्य इतिहास और संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों के इतिहास में सबसे गौरवपूर्ण अध्यायों में से एक मानी जाती है। यह लड़ाई ऑपरेशन उनाकोट की शुरुआत कांगो में संयुक्त राष्ट्र की शांति अपीलों की अवहेलना कर रहे कटांगी बलों की घेरेबंदी तोड़ने के लिए की गई थी। यह कटांगी बल संयुक्त राष्ट्र की एलिजाबेथविल स्थित चौकियों तक आवश्यक आपूर्ति मार्गों को बाधित करने की धमकी दे रहे थे।

इस भीषण प्रतिरोध के बीच, भारतीय सेना की 3/1 गोरखा राइफल्स, जिसकी अगुवाई ब्रिगेडियर के.ए.एस. राजा कर रहे थे। उन्होंने हमले की कमान संभाली। स्वीडिश बख्तरबंद वाहनों और आयरिश टुकड़ियों के सहयोग से गोरखों ने अपनी विशिष्ट वीरता और बिजली जैसी तेजी के साथ आगे बढ़कर कटांगी बलों पर हमला किया। दोपहर 2:30 बजे तक उन्होंने मजबूत सड़क अवरोधों को ध्वस्त कर दिया, जिससे संयुक्त राष्ट्र की सेनाओं के लिए महत्वपूर्ण आपूर्ति मार्ग फिर से खुल गए और दुश्मन को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया गया।

लेकिन इस लड़ाई का सबसे निर्णायक क्षण तब आया, जब कैप्टन गुरबचन सिंह सलारिया, 3/1 गोरखा राइफल्स के एक युवा अधिकारी ने अपने सैनिकों का नेतृत्व करके इतिहास रच दिया। उन्हें कटांगी बलों के बख्तरबंद वाहनों और पैदल सेना को निष्क्रिय करने का कार्य सौंपा गया था। उन्होंने अपने प्लाटून के साथ स्वीडिश एपीसी में सवार होकर लगभग 90 दुश्मन सशस्त्र बलों और उनके बख्तरबंद वाहनों से जानलेवा भारी गोलीबारी के बीच बहादुरी से आगे बढ़कर हमला किया।

जहाँ अन्य लोग पीछे हट सकते थे लेकिन कैप्टन सलारिया ने साहस को चुना। अपने गोरखाओं को संगठित करते हुए, उन्होंने निर्भीक होकर संगीन और खुकरी से हमला करने का आदेश दिया। गोलियों की बौछार के बीच गोरखाओं ने अपनी पारंपरिक खुखरी लेकर दुश्मन के करीब जाकर हमला किया। जबरदस्त हाथापाई की लड़ाई में उन्होंने 40 से अधिक दुश्मन सैनिकों को मार गिराया, बख्तरबंद कारों को नष्ट किया और बाकी दुश्मनों को डराकर भगा दिया।

वीरतापूर्ण संघर्ष में घातक रूप से घायल होने के बावजूद, कैप्टन सलारिया आखिरी सांस तक डटे रहे। उनकी वीरता ने एक विनाशकारी जवाबी हमले को रोका, गोरखा पक्ष को सुरक्षित किया और संयुक्त राष्ट्र के आगे बढ़ने को मजबूती से जारी रखा। उनके सैनिक, अपने वीरगति प्राप्त नेता से प्रेरित होकर, लगातार गोलीबारी के बीच कब्जे वाली जमीन पर मजबूती से काबिज रहे।

इस अद्वितीय वीरता के कार्य के लिए कैप्टन सलारिया को मरणोपरांत भारत का सर्वोच्च युद्धकालीन सम्मान - परमवीर चक्र (पीवीसी) प्रदान किया गया। आज तक वे संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन में परमवीर चक्र पाने वाले एकमात्र वीर योद्धा हैं। वे भारतीय सैनिक की वीरता, बलिदान और अदम्य प्रेरणा के प्रतीक के रूप में अमर हो चुके हैं।

5 दिसम्बर को गोरखाओं की वीरता ने कांगो अभियान की दिशा ही बदल दी। कटांगी स्नाइपर्स, मोर्टार और विदेशी सैन्य सलाहकारों ने संयुक्त राष्ट्र की बढ़त को रोकने का भरसक प्रयास किया, लेकिन अब गति को रोका नहीं जा सकता था। ओएनयूसी के विमानों ने दुश्मन के ठिकानों पर बमबारी की, आपूर्ति भंडार नष्ट किए और सहायता मार्गों को काट दिया। 6 दिसम्बर तक, स्वीडिश सैनिकों ने प्रमुख रेलवे सुरंगों पर कब्जा कर लिया, जबकि भारतीय गोरखा, अडिग साहस और संकल्प के प्रतीक बनकर, दुश्मन के भारी विरोध के बावजूद आगे बढ़ते रहे।

अगले कुछ दिनों में संयुक्त राष्ट्र बलों ने अपनी बढ़त को और मजबूत किया और भारी बमबारी और स्नाइपर फायर के बावजूद लगातार कटांगी ठिकानों पर हमला करते रहे। दुश्मन ने नागरिक इलाकों को ढाल के रूप में इस्तेमाल किया और विदेशी सलाहकारों पर निर्भर रहा, फिर भी वे ओएनयूसी बलों के संकल्प को डिगा नहीं सके और सबसे बढ़कर भारतीय गोरखाओं की अटूट दृढ़ता को कोई नहीं तोड़ सका।

7 से 9 दिसम्बर तक ओएनयूसी ने हवाई श्रेष्ठता हासिल कर ली और नई टुकड़ियों का स्वागत किया और कटांगी ढांचे पर निर्णायक हमले शुरू कर दिए। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय इस कार्रवाई को लेकर बंटा हुआ था, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका ने कांगो की एकता के लिए संयुक्त राष्ट्र के प्रयासों का समर्थन किया, वहीं ब्रिटेन, फ्रांस और बेल्जियम ने आलोचना की। इस तूफान के बीच एक तथ्य निर्विवाद था कि भारतीय सेना का योगदान जिसका नेतृत्व ब्रिगेडियर राजा की 99 इन्फैंट्री ब्रिगेड ने किया और 3/1 गोरखा राइफल्स का दृढ आधार स्तंभ जो सबसे ऊपर और अडिग बना रहा।

कैप्टन सलारिया (परमवीर चक्र) की अद्वितीय वीरता, और नायक महावीर थापा (महावीर चक्र) जैसे वीरों के बलिदान ने भारत को ओएनयूसी की रीढ़ के रूप में प्रस्तुत किया। उनका साहस केवल सैन्य विजय तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने उस सच्चे शांति रक्षक की भावना को साकार किया।

विज्ञप्ति

डिफेंस ट्रैवल सिस्टम (डीटीएस) में रक्षा कर्मियों के लिए हवाई यात्रा पर चेक-इन बैगेज की बढ़ी हुई सुविधा

- डिफेंस ट्रैवल सिस्टम (डीटीएस) के लिए इंडिगो, एयर इंडिया एंड एयर इंडिया एक्सपेस द्वारा हवाई यात्रा करने वाले रक्षा कर्मियों को अब अतिरिक्त 5 किलोग्राम चेक-इन सामान की सुविधा नि:शुल्क प्रदान की जा रही है। इस सुविधा का लाभ उठाने की विस्तृत प्रक्रिया निम्नलिखित है:
  - ➢ इंडिगो एयरलाइंस एवं एयर इंडिया एक्सप्रेस: रक्षाकर्मी यात्रियों को संबंधित एयरलाइंस की वेबसाइट पर वेब चेक-इन करते समय "एडीशनल 5 केजी बैगेज" (फ्री ऑफ कॉस्ट) के विकल्प को सेलेक्ट करना अनिवार्य है। यह सुविधा केवल वेब चेक-इन के माध्यम से ही उपलब्ध है। एयरपोर्ट पर चेक-इन काउंटर पर डीटीएस टिकिट दिखाकर नहीं जोड़ी जा सकती। यदि वेब चेक-इन के दौरान यह विकल्प चयनित नहीं किया गया तो एयरपोर्ट पर चेक-इन काउंटर पर केवल DTS टिकट दिखाकर यह सुविधा नहीं दी जाएगी।
  - ➢ एयर इंडिया के लिए: जब टिकट डीटीएस पोर्टल या अधिकृत ट्रैवल एजेंसियों के माध्यम से बुक किया जाता है, उस समय अतिरिक्त 5 किलोग्राम सामान स्वत: ही नि:शुल्क प्रदान कर दिया जाएगा।
- यह पुन: स्पष्ट किया जाता है कि इंडिगो और एयर इंडिया एक्सप्रेस में यह अतिरिक्त 5 किलोग्राम सामान की सुविधा सिर्फ वेब चेक-इन के दौरान ही प्राप्त की जा सकती है। यह सुविधा एयरपोर्ट काउंटर या एयरलाइन के कस्टमर केयर के माध्यम से प्रदान नहीं की जाएगी। सभी रक्षा कर्मियों को सलाह दी जाती है कि वे अपनी हवाई यात्रा के दौरान इस सुविधा का पूर्ण लाभ उठाएं।

जानकारी के लिए संपर्क करें

प्रकाशक: स्ट्रेटजिक कम्युनिकेशन, रक्षा मंत्रालय (सेना), आईएचक्यू का अतिरिक्त महानिदेशालय

संपादक बातचीत ईमेल: editorbaatcheet@gmail.com

संपर्क नंबर: 011-23018665

प्रिंटर: एनीथिंग प्रिंटर, **फोन:** 011-45685718

BAATCHEET